भाकृअनुप-केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपूर

कपास की खेती के लिए १७-२३ अक्टुबर, २०१६ साप्ताहिक सलाह

"सलाहकार संबंधित राज्यों के राज्य कृषि व कृषि विश्वविद्यालयों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर किया जाता है"

साप्ताहिक सलाह

दिनांक	१२-१६ अक्टुबर २०१६	मौसम विभाग व्दारा संभावित वर्षा (मिमी) १७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	सलाह
पंजाब									फसल गूलर प्रस्फुटन अवस्था में है और कपास चुनाई का कार्य चल रहा है। इस सप्ताह उत्तरी क्षेत्र के लगभग सभी स्थलों पर कपास की पहली चूनाई लगभग पुरी हो चुकी है। सड़े हुए गूलरों से कपास न चुनें। प्रातःकाल ज्यादा जल्दी भी कपास चुनाई का कार्य प्रारंभ न करें। सूक्ष्मजीवों के नुकसान से बचने के लिए भण्डारण से पहले कपास को सुखा लें।
भटिंडा	0	0	0	0	0	0	0	0	
फिरोजपुर	0	0	0	0	0	0	0	0	
मुकतसर	0	0	0	0	0	0	0	0	
मानसा	0	0	0	0	0	0	0	0	
हरियाणा									
सिरसा	0	0	0	0	0	0	0	0	
हिसार	0	0	0	0	0	0	0	0	
फ़तेहाबाद	0	0	0	0	0	0	0	0	
राजस्थान									
हनुमानगढ़	0	0	0	0	0	0	0	0	
श्रीगंगानगर	0	0	0	0	0	0	0	0	
बांसवाड़ा	0	0	0	0	0	0	0	0	
उड़ीसा									रोगों का प्रकोप नहीं है। कुछ गांवों में रस चूशक कीटों की संख्या आर्थिक हानि स्तर से अधिक दर्ज की गई है। सिफारिष किए गए रोकथाम के उपाय प्रारंभ किए जा सकते हैं। भवानीपटना जिले में 03 गांवों (दामुदरपुर, करलाकोट तथा सहजेत) में प्रत्येक गांव के 4-5 स्थलों में सिर्फ जैसिड की संख्या आर्थिक हानि स्तर से अधिक दर्ज की गई है।
कोरापुट	0	0	0	0	0	0	0	0	
कालाहांडी	0	0	0	0	0	0	0	0	
बोलांगीर	0	0	0	0	0	0	0	0	

गुजरात									
अमरेली	0	0	0	0	0	0	0	0	गुजरात के अधिकांष कपास उत्पादक क्षेत्रों में फसल गूलर विकास अवस्था में है। नाषीकीट ग्रसन के लिए सूरत जिले के 05 गांवो में सर्वेक्षण किया गया जिनमें से केवल जैसिड की संख्या पिसाद गांवों के 1 से 3 स्थलों पर आर्थिक हानि स्तर से अधिक पाई गई। निगरानी के लिए गूलर की गुलाबी सूँडी के फीरोमान ट्रैप/ 4.5 ट्रैप/हे फसल में तुरन्त स्थापित करें।
भावनगर	0	0	0	0	0	0	0	0	
जामनगर	0	0	0	0	0	0	0	0	
राजकोट	0	0	0	0	0	0	0	0	
भरूच	0	0	0	0	0	0	0	0	
सबरकांठा	0	0	0	0	0	0	0	0	
सुरेन्द्रनगर	0	0	0	0	0	0	0	0	
अहमदाबाद	0	0	0	0	0	0	0	0	
वडोदरा	0.1	0	0	0	0	0	0	0	
पाटन	0	0	0	0	0	0	0	0	
मेहसाना	0	0	0	0	0	0	0	0	
मध्य प्रदेश									फसल षीर्श गूलर विकास अवस्था में है। रोगों का प्रकोप नहीं है। कुछ गांवों में रस-चूशक कीटों की संख्या आर्थिक हानि स्तर पार कर चुकी है। सिफारिष किए गए रोकथाम के उपाय प्रारंभ किए गए जा सकते हैं।
खरगोन	0	0	0	0	0	0	0	0	
धार	0	0	0	0	0	0	0	0	
खंडवा	0	0	0	0	0	0	0	0	
महाराष्ट्र									राहुरी में फसल गूलर विकास अवस्था में हैं। खरपतवारों का मध्यम से भारी प्रकोप देखा गया है जिसके रोकथाम के उपाय किए गए हैं। एल्टरनेरिया षीर्णन तथा तंबाखू धारी विशाणु देखे गए हैं। पैंतीस दिनों के सूखाकाल के पष्चात भारी वर्शा हुई जिसके परिणाम स्वरूप लाल पत्ती रोग गंभीर स्थिति में दर्ज किया गया। अकोला जिले के सर्वे किए गए 03 गांवों में से अदोषी गांव के एक स्थल पर सफेद मक्खी की संख्या आर्थिक हानि स्तर से अधिक दर्ज की गई तथा गोनवा तथा अदोषी गांवों के क्रमषः 01 तथा 02 स्थलों पर जैसिड की संख्या आर्थिक हानि स्तर से अधिक दर्ज की गई। अडोषी गांव के एक स्थल पर फूलकीट(थ्रिप्स) की संख्या आर्थिक हानि स्तर से अधिक देखी
धुले	0	0	0	0	0	0	0	0	
नांदूरबार	0	0	0	0	0	0	0	0	
जलगांव	0	0	0	0	0	0	0	0	
अहमदनगर	0	0	0	0	0	0	0	0	
औरंगाबाद	0	0	0	0	0	0	0	0	
जालना	0	0	0	0	0	0	0	0	
बीड़	0	0	0	0	0	0	0	0	
नांदेड़	0	0	0	0	0	0	0	0	
परभणी	0	0	0	0	0	0	0	0	

हिंगोली	0	0	0	0	0	0	0	0	गई। नांदेड जिले के 05 गांवों(पिंपलगाव, फुलवाल, केरोडा, वरतला तथा तुप्पा) में बीटी कपास पर सर्वेक्षण किया गया। सर्वे किए गए सभी गांवों के 05 स्थलों में सफेदमक्खी तथा इन सभी गांवों के 2 से 4 स्थलों पर जैसिड आर्थिक हानि स्तर से अधिक दर्ज किए गए। इसके साथ ही मिलीबग की संख्या 1-2 स्थलों पर गुलाबी सूँडी की संख्या 2 से 3 स्थलों पर, अमेरिकन सूँडी की संख्या 1 से 2 स्थलों पर, एस. लिटूरा 1 से 2 स्थलों पर, चित्तीदार सूँडी की संख्या 2 से 4 स्थलों पर, सभी सर्वे किए गए गांवों में बीटी संकरों पर रिकार्ड की गई।
बुलढाना	0	0	0	0	0	0	0	0	
अकोला	0	0	0	0	0	0	0	0	
वासिम	0	0	0	0	0	0	0	0	
अमरावती	0	0	0	0	0	0	0	0	
यवतमाल	0	0	0	0	0	0	0	0	
वर्धा	0	0	0	0	0	0	0	0	
नागपुर	0.2	0	0	0	0	0	0	0	
चन्द्रपुर	0	0	0	0	0	0	0	0	

तेलंगाना									मृदा नमी उपलब्ध है तथा एक वर्धक मात्रा के रूप् में उर्वरकों के मृदा में अनुप्रयोग का उपयुक्त समय है जिसमें/ यूरिया 20 किग्रा, 10-15 किग्रा म्यूरेट आफ पोटाष/एकड़ के साथ यूरिया 2% (20ग्रा/ली) अथवा 1-2% (10-20 ग्रा/ली) पोटेषियम नाईट्रेट के साथ 1% (10ग्रा/ली) मेग्नीषियम सल्फेट का फसल पर 2 से 3 बार छिड़काव, 5 से 7 दिनों के अंतराल पर करने की सिफारिष की जाती है। जलमग्नता, आकस्मिक मुरझान तथा फलन अंगो के झड़न की रोकथाम के लिए खेत से अतिरिक्त वर्षाजल की निकासी करें। प्लानोफिक्स का 15 दिनों के अंतराल पर फसल पर छिडकाव करने की गंभीर सिफारिष की जाती है। रोगों के लिए फसल की निगरानी करते रहें। लघु कली तथा गूलरों के झडन को रोकने के लिए फसल पर प्लानोफिक्स के छिडकाव की सिफारिष की जाती है। कुछ गांवों में गुलाबी सूँडी का ग्रसन आर्थिक हानि स्तर से ऊपर दर्ज किया गया । निगरानी के लिए गुलाबी सूँडी के फीरोमोन ट्रैप/ 4 से 5/हे की संख्या में फसल में तुरन्त स्थापित किए जा सकते हैं।
आदिलाबाद	0	0	0	0	0	0	0	0	
वारंगल	0	0	0	0	0	0	0	0	
खम्मन	0.1	0	0	0	0	0	0	0	
कारिंगर	0	0	0	0	0	0	0	0	
नालगोंडा	0	0	0	0	0	0	0	0	
महबूबनगर	0.4	0	0	0	0	0	0	0	
आंध्रप्रदेश									फसल गूलर निर्माण अवस्था में है। जैसिड का प्रकोप दर्ज किया गया है। तात्कालिक आवष्यकता के रूप में सिफारिष किए गए कीटनाषकों का फसल पर छिडकाव किया जा सकता है। वर्तमान मौसम के कारण जीवाणु षीर्णता तथा फफुँद जनित पत्ती धब्बा रोग फसल पर दिखाई दे सकते हैं। रोग निरोधक नियंत्रण उपाय किए जा सकते हैं। एक वर्धक मात्रा के रूप में उर्वरकों के मृदा अनुप्रयोग में यूरिया 25-35 किग्रा तथा 10-15 किग्रा म्यूरेट आफ पोटाष फसल में दें। इसके साथ ही पोशकतत्वों के पर्णिल छिडकाव के रूप में यूरिया 2% (20ग्रा/ली)अथवा 1-2% (10-20 ग्रा/ली) पोटेषियम नाईट्रेट के साथ 1% (10ग्रा/ली) मेग्नीषियम सल्फेट का फसल पर 2 से 3 बार छिड़काव, 5 से 7 दिनों के अंतराल पर करें। गुंटूर जिले में 10 गांवों
गुन्टूर	0	0	0	0	0	0	0	0	
प्रकासम	0	0	0	0	0	0	0	0	

									का सर्वेक्षण किया गया जिनमें पेडापारिमी तथा लिंगापुरम गांवों के प्रत्येक के एक स्थल पर जैसिड की संख्या आर्थिक हानि स्तर से अधिक दर्ज की गई।
कर्नाटक									अधिकांष कपास उत्पादक क्षेत्रों में फसल 120 से 125 दिनों की तथा गूलर विकास अवस्था में है। विगत सप्ताह धारवाड तथा हवेरी जिलों के कपास उत्पादक क्षेत्रों में कहीं-कहीं अधिक तेज वर्शा रिकार्ड की गई। बेलगाम, हवेरी तथा धारवाड जिलों के कपास उत्पादक क्षेत्रों में रस-चूशक कीटों, मिरिड बग तथा गुलाबी सूँडी के लिए फसल सुरक्षा उपाय किए गए। बीटी कपास के खेतों में बडे पैमाने पर गुलाबी सूँडी के पतंगों को पकडने के लिए सफीरोमोन ट्रैप स्थापित करें। धारवाड तथा बेलगाम जिलों के कुछ हिस्सों में एल्टरनेरिया पत्ती धब्बा फसल पर देखा गया। इसकी रोकथाम के लिए कॉपर-ऑक्सी क्लोराइड 50 डब्लूपी/ 3ग्रा/ली अथवा मेन्कोजेब 75डब्लूपी/2ग्रा/ली की दर से फसल पर छिडकाव का सुझाव दिया जाता है। हवेरी, धारवाड तथा बेलगाम जिलों के कुछ हिस्सों में गुलाबी सूँडी, मिरिड बग तथा मिज के बीटी कपास में प्रकोप का प्रबंधन करने के लिए विषेश निगरानी तथा सावधानी के उपाय करने का सुझाव दिया जाता है। कपास उत्पादक किसानों में इन नाषीकीटों के लिए समय-समय पर प्रषिक्षण देकर, खेतों में भ्रमण करके तथा वॉइस-संदेष भेजकर जागरूकता उत्पन्न की जा रही है।
धारवाड़	42.9	0	0	0	0	0	0	0	
हवेरी	2.6	0	0	0	0	0	0	0	
मैसूर	4.9	0	0	0	0	0	2	2	
तामिलनाडु									फसल कली तथा पुश्पन अवस्था में है। नत्र तथा पोटाष का मृदा में अनुप्रयोग तथा पौधों पर मिट्टी चढाने की सिफारिष की जाती है। फसल को खरपतवार मुक्त रखने के लिए 44-52 दिनों की फसल में हाथ से निराई करने का सुझाव दिया जाता है। मौसम की परिस्थिति के कारण लगातार रस चूशक कीटों की संख्या दर्ज की जा रही है।
पेरंबलुर	8.1	0	0	0	0	0	0	0	
सलेम	26.8	0	0	0	0	0	0	0	
त्रिची	15.0	0	0	0	0	0	0	0	
विरडुनगर	56.8	0.9	0	0	1	0	0	5	

									किसानों को सिफारिष किए गए कीटनाषकों का फसल पर नियमित अंतराल पर छिडकाव करने की सलाह दी जाती है। रोगों का प्रकोप नहीं है। श्रीविल्लीपुत्तूर में षीतकालीन सिंचित फसल वानस्पतिक अवस्था में है। फसल की हालत अच्छी है। माल्ली गांव के 2 स्थलों पर जैसिड तथा फूलकीट(थ्रिप्स) की संख्या आर्थिक हानि स्तर से अधिक दर्ज की गई।

आदर्श वर्षा					
वर्षा मि.मी.	<5	5-20	21-50	50-80	>80

0 mm rainfall in the blank spaces
Source: http://nwp.imd.gov.in/bias/dist_fcst.htm

साप्ताहिक सलाहकार संयोजक टीम:

डा. के.आर. क्रांति, डा. ए. एच. प्रकाश, डा. संध्या क्रांति, डा. डी. मोंगा, डा. ब्लेज़ डी-सूजा, डा. एस. बी. सिंह, डा. सिंगनधूपे, डा.एम.वी. वेणुगोपालन, डा. इसाबेला अग्रवाल, डा. एम.सबेस, डा. विश्लेष नगरारे, डा. ऋषि कुमार, डा. एन अनुराधा नराला, डा. दीपक नगराले, श्रीमति संगीता औरंगाबादकर एवं कु. सचिता एलेकर

हिन्दी संसकरण: उल्हास नंदनकर, मुख्य तकनीकी अधिकारी एवं प्रभारी, हिन्दी अनुभाग तथा प्रभारी, वरिष्ठ प्रक्षेत्र अधीक्षक, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)